पाठ–3
नालंदा महाविहार : एक परिचय

मूल पाठ :–

नालंदा नालम् और दा के संयोग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है, कमल यानी ज्ञान देने वाला। पूर्व में नालंदा में काफी सरोवर थे, जो कमल प्राप्त होने के मुख्य स्त्रोत थे। महाविहार की स्थापना के बाद इसका नाम नालंदा महाविहार हो गया। समय के साथ इसके नाम में बदलाव आया और यह नालंदा विश्वविद्यालय के रूप में विख्यात हुआ। नालंदा को प्राचीन काल से ही वैभवशाली ग्राम का गौरव प्राप्त है। यहाँ लेपा नाम का एक धनी किसान रहता था। एक बार 'तथागत' लेपा के यहाँ अतिथि बन कर आए थे। लेपा ने इस अवसर पर बड़े भवन स्नानागार आदि 'तथागत' को भेंट किये। वह स्वयं उनका अनुयायी बना और नालन्दा में विहार की नींव पड़ी।

धरोहर :–

6ठीं शताब्दी दुनिया के लिए धार्मिक जागरण काल था। भारत में भी बौद्ध एवं जैन धर्म का उदय हुआ। इन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक कार्य किया। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे प्रभावित हुआ। बौद्ध धर्म की स्थापना के साथ ही नालंदा का शिक्षा के क्षेत्र में उदय हुआ। यह मौर्य एवं गुप्त शासन काल में भी पला–बढ़ा। वर्धन काल विशेषकर हर्षवर्द्धन के समय में नालंदा विश्वविद्यालय अपने पूर्ण उन्नति पर था। पूरी दुनिया के शिक्षार्थियों के लिए इसमें नामांकन होना गौरव की बात थी।

नालंदा विश्वविद्यालय की प्रसिद्धि पड़ोसी राज्यों तक पहुँची। फा–ही–यान पहला चीनी यात्री था जो नालंदा आया। युवान–च्वाङ्ग और इंत्सिग क्रमशः 637 ई0 एवं 670 ई0 में यहाँ आए। तीनों के अन्दर ज्ञान प्राप्त करने की उत्कंट लालसा थी। युवान–च्वाङ्ग ने अपने यात्रा–वृत्तान्त एवं जीवनी में ढेरों जानकारियाँ दी हैं।

नालंदा का वैभव :–

पाटलिपुत्र(पटना) से 55 मील दक्षिण और राजगृह से 17 मील उत्तर नालंदा की स्थिति राज्य के प्रमुख राजमार्गों के मध्य है। युवान–च्वाङ्ग के अनुसार नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना शक्रादित्य ने 5वीं शताब्दी में की थी। चीनी यात्रियों ने विश्वविद्यालय की सुंदरता एवं भव्यता की गहराई से प्रशंसा की है। सम्राट हर्षवर्द्धन ने विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर 100 फीट ऊँचा एक विशाल विहार स्तम्भ बनवाया। स्तम्भ पीतल की परत से ढँका था। इतना ही नहीं भगवान बुद्ध की 80 फीट ऊँची विशाल मूर्ति भी थी। भवनों की सजावट अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की थी। विश्वविद्यालय मे 8 मुख्य विशाल भवन थे जिनमें से एक श्रीविजय के राजा बालपुत्रदेव ने बनवाया था। विश्वविद्यालय के निर्माण में विदेशों से भी काफी धन राशि प्राप्त हुई। विशाल भवनों के साथ–साथ 6 विशाल मठों का भी निर्माण हुआ। 5 मठों का निर्माण गुप्त राजाओं ने किया जबकि एक मठ का निर्माण सम्राट हर्षवर्द्धन ने करवाया। इनके अतिरिक्त परिसर में अन्य इमारतें भी थीं जिनमें पुस्तकालय, मन्दिर, चैत्य, प्रशासनिक भवन आदि चलते थे। निर्माण एवं नवीकरण का कार्य स्थापना काल से लगभग 700 वर्षों तक अनवरत चलता रहा। इसकी भव्यता को देखकर कनिंघम नें यह कहा कि ''यहाँ पाई गई शिल्पकला समस्त भारत में प्राप्त कला से सुन्दर है।'' कनिंघम विश्वविद्यालय उत्खननकर्त्ता थे जिन्होंने अवशेषों को नजदीक से देखा और उसका विशलेषण किया।

नालंदा विश्वविद्यालय में प्रवेश :–

नालंदा विश्वविद्यालय की ख्याति पूरे भारत में फैल चुकी थी। भारत के अतिक्ति कोरिया, तिब्बत, मंगोलिया, कंबोडिया, श्रीलंका, सुमात्रा, बालीद्वीप, जावा आदि देशों के विद्यार्थी यहाँ पढ़ने आते थे। विश्वविद्यालय में स्थान सीमित थे जबकि प्रवेश लेने वाले छात्रों की संख्या अधिक। यहाँ नामांकन प्रतियोगिता परीक्षा के आधार पर होता था। प्रवेश परीक्षा लेने के लिए विशेषज्ञों का दल बना था, जिन्हें द्वार पंडित कहा जाता था। इनके द्वारा अनुशंसित विद्यार्थी ही अंतिम रूप से नामांकन के योग्य समझे जाते थे। परीक्षा में धार्मिक एवं लौकिक जीवन से संबद्ध प्रश्न तो पूछे ही जाते थे, उनके सामान्य एवं सहजज्ञान का भी मूल्यांकन किया जाता था। निश्चित रूप से प्रवेश प्रक्रिया कठिन थी। फलतः कम ही विद्यार्थी सफल हो पाते थे। युवान–च्वाङ्ग के मुताबिक तो विदेशी छात्रों के लिए प्रश्न इतने मुश्किल थे कि परीक्षा के पूर्व ही वे अपना नाम वापस ले

लेते थे। सफल छात्रों का प्रतिशत 20 प्रतिशत से 30 प्रतिशत के करीब होता था। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संख्या लगभग 10,000 थी और एक 1,510 आचार्य थे।

शिक्षार्थी भी दो तरह के होते थे एक बौद्ध भिक्षुक बनकर संघ में प्रवेश करते थे। दूसरे शिक्षा के पश्चात् संसारिक जीवन में जाते थे। ये ब्रहम्चारी या मानव कहलाते थे। जहाँ भिक्षुक की शिक्षा मुफ्त थी वहीं सामान्य आदमी अपने खर्च पर विद्या अध्ययन करता था। शारीरिक श्रम करके शिक्षा ग्रहण का विधान था। विद्यार्थी के कार्यों एवं विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों का निर्धारण 'कर्मदान' नामक अधिकारी करता था। शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विद्वता या किसी विशिष्ट कार्य का उल्लेखनीय प्रमाण देने वाले छात्र को शारीरिक श्रम से मुक्ति मिल जाती थी।

नालंदा में अध्यापन :–

नालंदा में दो प्रकार के पाठ क्रम थे। पहला प्रारांभिक शिक्षा और दूसरा उच्च शिक्षा। प्रारंभिक शिक्षा की न्यूनतम आयु 6 वर्ष और अधिकतम आयु 8 वर्ष थी। इसके पाठ पुस्तक का नाम सिद्धिरस्तु था। जिसमें वर्णमाला के 49 अक्षर होते थे। दूसरी पुस्तक जिसकी शुरूआत 8 वर्ष की अवस्था से होती थी, इसमें पाणिनि का लिखा व्याकरण जिसमें 1000 सूत्र होते थे। इसके बाद धातु और कशिकावृत्ति का अध्ययन होता था।

नालंदा बौद्ध अध्ययन का केन्द्र था, जहाँ पाठ्यक्रम के रूप में हिन्दु धर्म के पवित्र ग्रन्थ दर्शन शास्त्र एवं चिकित्सा शास्त्र मुख्य विषय होते थे। इसके अलावा तर्क शास्त्र और विभिन्न धार्मिक ग्रन्थ की पढ़ाई होती थी। यहाँ के सभी विद्यार्थी महायान पंथ तथा 18 संप्रदायों के ग्रन्थों का अध्ययन करते थे।

चिकित्सा का प्रारंभिक अध्ययन सभी विद्यार्थीयों के लिए अनिवार्य था। चिकित्सा विद्या के अध्ययन में प्रत्येक बीमारी को पहचानना तथा जड़ी–बूटियों के आधार पर इनका उपचार सिद्धांत, शल्य चिकित्सा से बमन कराने, पेट का मल बाहर निकालने, चीड़ने, छेदने, घाव को साफ करने, सुखाने, तीखे दर्द कम करने वाले मलहमों का उपयोग और दागने में शल्य चिकित्सा के औजार को ठीक ठाक साधने का प्रशिक्षण दिया जाता था। इत्सिंग के अनुसार चिकित्सा विज्ञान के प्रारंभिक ज्ञान सभी के लिए अनिवार्य थी।

नालंदा और युवान चुवाड. :–

युवान चुवाड. 637 ई0 में नालंदा आया था। इसे यात्रियों का राजकुमार, नीति का पंडित एवं वर्तमान शाक्यमुनि कहते हैं। इनहोंने भारत के वर्णन के अलावा नालंदा विश्वविद्यालय के विषय में भी बताया है।

इन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने के बाद यहाँ के शिक्षा के बारे में लिखा है कि ''भारत में हजारों मठ हैं लेकिन इस मठ के समान सौंदर्य संपत्ति और ऊँची इमारतें कहीं भी नहीं है''। यहाँ भीतर और बाहर मिलाकर 10 हजार विद्यार्थी हैं और सभी महायान सिद्धांत के अनुयायी हैं। 18 संप्रदायों के विद्यार्थी यहाँ एक हैं। यहाँ वेद, चिकित्सा शास्त्र, तंत्र विद्या एवं गणित विषयों की पढ़ाई होती थी।

शीलभद्र नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति थे। उन्हीं के अधीन रहकर युवान चवाड. ने संपूर्ण अध्ययन किया। इन्होंने नालंदा में रहकर ''विज्ञाप्ति मात्रता सिद्धि'' की रचना की। इन्हें ''क्यू–शे'' का जनक भी माना जाता है। इन्हें अन्य प्रणाली ''ल्यू (विनय)'' का जनक भी कहा जाता है ।

नालंदा का पुस्तकालय :–

नालंदा में उच्च शिक्षा के अध्ययन के लिए विशाल शोध सामग्री के पुस्तकालय थे। यहाँ तीन पुस्तकालय थे– रत्नसागर, रत्नोंदधि एवं रत्नरंजक। इसके अलावा एक विशाल पुस्तकालय भी था, जिसे धर्म यज्ञ कहते थे। इन पुस्तकालयों में 18 संप्रदायों के ग्रंथ एवं पाण्डुलिपियों का विशाल संग्रह था। यहाँ दो प्रकार के कक्ष थे। समान कक्ष में अनिवार्य विषय की पुस्तक रखी हुई थी और विशेष कक्ष में शोध एवं अनुसंधान के लिए बहुमूल्य पांडुलिपियाँ अध्ययन सामग्री रखी होती थी। जो अनुसंधानकर्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करती थी। इसके अलावा धर्म एवं विज्ञान, संस्कृत, पाली और प्राकृत भाषा की पुस्तक भी थी।

नालंदा के प्रसिद्ध विद्वान :–

नालंदा के प्रसिद्ध विद्वान संतरक्षित, पद्मसम्भव, कमलशील, स्थिरमति और बुद्धकीर्ति तिब्बत जाकर धर्म का प्रचार किए। इसके बाद चीन में जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार किया। जिनमें कुमारजीव, परमार्थ, सुधंकर और धर्मकीर्ति ने भी हिस्सा लिया। कुमारजीव को आधुनिक शेक्सपीयर कहा जाता है। इनहोंने संस्कृत और चीनी भाषाओं का अनुवाद किया। इन्हों ने बौद्ध धर्म की आत्माओं को चीन पहुँचाने का काम किया। इसके अलावा यहाँ नागार्जुन, धर्मपाल, गुजमति, चन्द्रपाल, प्रभामित्र जिनमित्र, गुणामित्र और ज्ञानचंद्र जैसे विद्वान रहते थे। नागार्जुन दार्शनिक और उच्चस्तरीय वैज्ञानिक और धातु वैज्ञानिक थे। इसीलिए इन्हें भारतीय आइंस्टाइन भी कहते हैं।

लेखकः– रविमोहन